**एक आवाज - एक मकसद**

"अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के लिए भक्ति संदेश"

## प्रथम दिवस

द्वारा पवित्रा जी.एस.,बंगलुरु,कर्नाटक, भारत

चिंतन के लिये प्रश्न:- **"जब आपने मसीह में बपतिस्मा लिया था, तो आपका उद्देश्य क्या था? क्या आप उसे याद कर सकते हैं?"**

**रोमियों 15:5-6 (Hindi - BSI)**

"अब धैर्य और शांति देनेवाला परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे कि तुम आपस में एक मन रहो, जैसा कि मसीह यीशु के योग्य है। ताकि तुम एक मन और एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की महिमा करो।"

यह अंश कहता है कि हमारे जीवन का उद्देश्य एक स्वर में परमेश्वर की महिमा करना है।यशायाह 43:7 पर चिंतन करते हुए,मेरा विचार है,कि परमेश्वर की महिमा करना ,उसे स्तुति या उपासना के माध्यम से महान बनाना है। परमेश्वर अद्भुत हैं। वे अद्वितीय और चमत्कारी हैं। वे अपने स्वभाव और कर्मों में विशेष रूप से महान हैं। हमारे चारों ओर की प्राकृतिक दुनिया इसकी गवाही देती है। जब हम उनकी महिमा करते हैं, तो हम उनकी भव्यता और वैभव को पहचानते हैं। हम उनकी सराहना करते हैं, जिसके वो योग्य हैं।पॉल यहाँ कहते हैं कि परमेश्वर धैर्य और प्रोत्साहन का परमेश्वर है। वही हमें सहनशीलता की क्षमता देता है और वही हमें प्रोत्साहन देता है। हम शिष्य इसलिए बने क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसा करने के लिए विश्वास दिया। परमेश्वर ने हमें उसे प्रेम करने और उसकी प्रजा की सेवा करने का हृदय दिया। परमेश्वर ने हमें वैसे ही बनाया है जैसे हम हैं और जो कुछ हम शिष्य के रूप में करते हैं।यदि हम सावधान न रहें, तो यहाँ तक कि मसीही विश्वासी भी ईश्वरीय कार्यों को अपनी महिमा प्राप्त करने के लिए करने लगते हैं, बजाय इसके कि वे परमेश्वर की महिमा करें। मुझे आपको अपने जीवन की एक घटना साझा करने दीजिए जब मैं अपनी महिमा की खोज कर रहा थी।

मैं पूर्णकालिक सेवकाई के अपने प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाली थी, जो एक सम्मेलन के मंच पर दिया जाना था। उस सम्मेलन में, सभी ने एक भाई की प्रचारक क्षमता और उसके द्वारा बपतिस्मा दिए गए लोगों की संख्या के लिए उसकी प्रशंसा की।

उसी समय, पवित्र आत्मा ने मुझे मेरी ईर्ष्यालु सोच के लिए आगाह कराया, क्योंकि मैं महसूस कर रहा थी कि कोई भी मेरी सेवा को मान्यता नहीं दे रहा, जबकि वे किसी और की सराहना कर रहे थे।

ईश्वर लोगों के जीवन को अपनी महिमा के लिए प्रभावित करते हैं और उसने उस भाई और मुझे एक उद्देश्य के लिए उपयोग किया। मैंने देखा कि अपने लिए प्रसिद्धि पाने का प्रयास करना मेरी मूर्खता थी। मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने मुझे अपनी गलती पहचानने में सहायता की, क्योंकि मैं अपनी महिमा की खोज में थी। मुझे अपने प्रमाणपत्र प्राप्त करने से पहले अपने पापों के लिये ईश्वर  से क्षमा की प्रार्थना करनी पड़ी।

बहनों, एक स्वर में परमेश्वर का सम्मान करने के लिए, हमें एक मन होना चाहिए। हमारे मतभेद, भय और अपराध हमें एक साथ आकर परमेश्वर की महिमा करने से न रोकें। हम ऐसा जीवन जिएं जो परमेश्वर की महिमा को प्रकट करे। आइए, हम अपनी स्तुति और महिमा केवल उसी को दें जो इसके योग्य है, क्योंकि स्वर्ग में हम सदा उसकी प्रशंसा करेंगे। आइए, हम इसके लिए स्वयं को तैयार करें।

आगे चिंतन के लिए:

1. उस आशीष को याद करें जिसकी आप अत्याधिक सराहना करते हैं। आज समय निकालकर इसके लिए परमेश्वर की महिमा करें।

2. क्या ऐसे कोई परिस्थितियाँ हैं–इस आशीर्वाद या अन्य के संदर्भ में–जहाँ आप स्वयं श्रेय लेते हैं, जबकि इसका वास्तविक श्रेय परमेश्वर को जाना चाहिए?

3. विचार करें: हम अपने विचारों, सेवा और दूसरों के साथ व्यवहार के माध्यम से परमेश्वर की और अधिक महिमा कैसे कर सकते हैं?

# एक आवाज - एक दृष्टिकोण

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के लिए सात दिवसीय भक्ति संदेश का दूसरा दिन

द्वारा-लूसी क्रिस्टी वर्गीस, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

जैसे परमेश्वर हमें धैर्य प्रदान करता है, वैसे ही वह हमें एक-दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करने की शक्ति भी देता है, जिससे हम एक-दूसरे को स्वीकार कर सकें।

## रोमियों 15:5-7

5 अब धैर्य और शांति देने वाला परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे कि तुम मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।6 ताकि तुम एक चित्त और एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की महिमा करो।7 इसलिये जैसे मसीह ने तुम्हें परमेश्वर की महिमा के लिये ग्रहण किया, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे को ग्रहण करो।

**1. सहनशीलता**

यह अनुभाग उस दृष्टिकोण के बारे में बात करता है जो हमें एक-दूसरे के प्रति रखना चाहिए, जैसा कि मसीह यीशु ने रखा था। मुझे याद है कि मैंने एक बार सुना था कि एक अविश्वासी ने प्रभु यीशु मसीह के क्रूसीफिक्शन की कहानी पढ़ी। जब उसने इस पर विचार किया, तो उसने निम्नलिखित अभिव्यक्ति के साथ निष्कर्ष निकाला:

"यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने न केवल कष्ट सहे, बल्कि यह भी जाना कि अपने कष्टों का उपयोग कैसे करना है।"

"हाइपोमोन" एक ग्रीक शब्द है जिसका उपयोग सहनशीलता (धैर्य) के गुण का वर्णन करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से उन परीक्षाओं के संदर्भ में जो धैर्य से जुड़ी होती हैं। यहाँ "हाइपोमोन" शब्द इंगित करता है कि सहनशीलता निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय होनी चाहिए। यह हमें ऐसे व्यक्ति की छवि की याद दिलाता है जो एक भारी बोझ के नीचे है, और यह बतलाता है कि जब आप उस बोझ को सहन कर रहे हों, तो आपको अपनी ऊर्जा इस तरह लगानी चाहिए कि आप मसीह के लिए लोगों को जीत सकें। दूसरे शब्दों में, आपके सहन करने के तरीके से दूसरों को मसीह दिखना चाहिए। आपकी सहनशीलता मसीह के लिए एक सक्रिय गवाही होनी चाहिए। मसीही जीवन में कोई निष्क्रिय सहनशीलता नहीं हो

नी चाहिए।प्रतिरोधक क्षमता का अर्थ है दर्दनाक या कठिन कार्य को लंबे समय तक बिना शिकायत किए जारी रखने की क्षमता।

मैं अपने पहले गर्भावस्था के अनुभव को सांझा करना चाहती हूँ, जो 2003 का है। गर्भावस्था परीक्षण में सकारात्मक परिणाम आने के पहले दिन से ही मुझे अत्यधिक उल्टियाँ होने लगीं, जिसे हाइपरएमेसिस ग्रेविडारम कहा जाता है। मेरा मुख्य पोषण नींबू सोडा बन गया। निर्जलीकरण और मूत्र मार्ग संक्रमण के कारण मुझे कई बार अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। आमतौर पर यह स्थिति तीन महीने बाद ठीक हो जाती है, लेकिन मेरे मामले में यह पूरी गर्भावस्था के दौरान बनी रही।

सातवें महीने में, मैंने खून की उल्टी शुरू कर दी। उस समय मुझे एंडोस्कोपी करवानी पड़ी, जो मेरे लिए असहनीय अनुभव था।

जब उन्हें पता चला कि मेरे अन्ननली (ईसोफेगस) में हल्का सा कट(फटना) है, तो मुझे सलाह दी गई कि मैं सोने के लिए एक बैकरेस्ट (पीठ टेकने का सहारा) का उपयोग करूं। कुल मिलाकर, मैंने गर्भावस्था के दौरान सात किलोग्राम (लगभग 15 और 1/2 पाउंड) वजन कम किया और पूर्ण अवधि पर पहुंचने के बाद सिजेरियन (सी-सेक्शन) भी करवाया। यह मेरी सेहत के लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण स्थिति थी, लेकिन इन सभी दर्द और संघर्षों को सहने में जो एक चीज़ मेरी मदद कर रही थी, वह थी उस बच्चे को देखने और अपनी बाहों में पकड़ने का विचार, जिसकी हलचलें मैं अल्ट्रासाउंड परीक्षणों के दौरान देख पाई थी।यह सहनशीलता मुझे और बच्चे को एक साथ लेकर आई और  इससे बहुत आनंद हुआ।

यहां एक गर्भवती  महिला की फोटो  लगायें

अब, मैं आपका ध्यान वापस उस अंश के दूसरे विषय की ओर ले जाना चाहती हूँ।

**2. एक-दूसरे के प्रति अच्छा दृष्टिकोण रखना और एक-दूसरे को स्वीकार करना**

रोम की कलीसिया एक विविध समुदाय थी। इसमें यहूदी और अन्य जातियाँ, गुलाम और स्वतंत्र लोग, अमीर और गरीब, विश्वास में मजबूत और कमजोर लोग शामिल थे। इसलिए, उनके लिए एक-दूसरे को स्वीकार करना कठिन था।

अब, मसीह ने आपको कैसे स्वीकार किया? क्या आप बिल्कुल आदर्श और परिपूर्ण व्यक्ति थे? क्या उन्होंने कहा, "जाओ, पहले अपने आचरण को सुधारो, तब मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा?" नहीं, उन्होंने हमें हमारी सभी कमजोरियों और त्रुटियों के साथ स्वीकार किया।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि जब कोई और पाप करता है तो वह हमें कितना भयानक लगता है? लेकिन हम अपनी गलतियों के प्रति कितने अंधे होते हैं।

मैं परमेश्वर की धैर्यता के लिए आभारी हूँ। मैं इसके लिए उनका धन्यवाद करती हूँ। लेकिन मैं हमेशा उनके साथ उतना धैर्यवान नहीं होती। मैं दूसरों की भी आभारी हूं अपने प्रति धैर्य  दिखाने का ,लेकिन मैं हमेशा उनके साथ इतनी धैर्यवान नहीं रहती। पवित्रशास्त्र कहता है, " जैसा  व्यवहार तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ  करें वैसा ही तुम भी दूसरों के साथ करो" (लूका 6:31)। जैसे परमेश्वर धैर्य और सांत्वना का स्रोत हैं, वैसे ही हमें भी एक-दूसरे के लिए होना चाहिए। हमें एक-दूसरे के प्रति सांत्वनादायक और धैर्यवान होना चाहिए।

यह सब प्रेम की महानता है। यदि मैं आप से उसी प्रकार प्रेम करूँ जैसे मैं स्वयं से करती हूँ, तो मैं आपकी छोटी-छोटी कमियों को नहीं देखूँगी और न ही उनकी आलोचना करूँगी। मैं आपको उसी प्रकार ग्रहण करूँगीं जैसे मसीह ने मुझे ग्रहण किया है। कभी-कभी हम कहते हैं, "मेरे मानकों के अनुसार चलो, वैसे जियो जैसा मैं चाहता हूँ, फिर मैं आपको अपना मित्र और साथी स्वीकार करूँगी।" लेकिन हमें एक-दूसरे को इस प्रकार स्वीकार नहीं करना चाहिए।हमें एक-दूसरे को हमारे मतभेदों के बावजूद स्वीकार करना चाहिए। और मसीह में जो प्रेम हमें मिला है, वह किसी भी मतभेद से बड़ा होना चाहिए। यह प्रेम ही मसीही समुदाय में एकता का सबसे बड़ा कारण होना चाहिए।

रोमियों की पुस्तक में, पौलुस ने लोगों से सद्भाव से रहने और अहंकार से बचने का आग्रह किया। उन्होंने सभी सामाजिक वर्गों के लोगों, विशेष रूप से निम्न स्थिति वालों के साथ मेल-जोल बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया और स्वार्थी लाभ के लिए संबंधों का उपयोग करने के विरुद्ध चेतावनी दी। यीशु की शिक्षाओं से प्रेरित होकर, पौलुस ने सभी के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की वकालत की, चाहे उनकी जाति, विकलांगता, आयु, लिंग या सामाजिक वर्ग कोई भी हो। उन्होंने यह भी जोर देकर कहा कि किसी को भी हीन नहीं समझना चाहिए।

मैं एक सच्ची कहानी आपसे  सांझा करना चाहती हूं जो  मेरे बहनोई प्रदीप की है, जो सीमा सुरक्षा बल (BSF) के एक समर्पित सदस्य हैं। उनकी टीम नियंत्रण रेखा (LoC) पर तैनात है और वे कुपवाड़ा जिले में सेवा करते हैं। यह क्षेत्र 2300 किलोमीटर के बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ है और यहाँ की कुछ जगहें 100% उच्च सतर्कता वाले क्षेत्र मानी जाती हैं, जिसका मतलब है कि वे हमेशा पड़ोसी देश से होने वाले हमलों के खतरे में रहते हैं।

इस क्षेत्र में जलवायु की कठिन परिस्थितियाँ उनके कार्य को और चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। यहाँ का तापमान -10 से -15 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है और कई महीनों तक भारी बर्फबारी होती है।

इस ऊँचाई वाले इलाके में तैनाती की तैयारी अगस्त महीने से शुरू हो जाती है, जब भोजन और अन्य आवश्यक आपूर्ति बॉर्डर पोस्ट तक पहुँचाई जाती हैं। यह पोस्ट समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित होती है। यहाँ जाने से पहले, प्रदीप और उनकी टीम को बेस कैंप में छह दिनों तक एक कठोर चिकित्सा परीक्षण से गुजरना पड़ता है। केवल उन्हीं जवानों को आगे जाने की अनुमति मिलती है जो चिकित्सकीय रूप से पूरी तरह फिट पाए जाते हैं, क्योंकि इतनी ऊँचाई पर ऑक्सीजन का स्तर काफी कम होता है। सैनिकों को ऊँचाई के अनुसार खुद को ढालने के लिए प्रतिदिन एक विशेष गोली दी जाती है।

बर्फीले ट्रेक के सामने प्रदीप की फोटो लगायें

अक्टूबर में जब आप बॉर्डर पोस्ट पर पहुँचते हैं, तो आप अप्रैल या मई में नीचे आ सकते हैं। एक पोस्ट से पड़ोसी पोस्ट तक यात्रा करने में एक सप्ताह लगता है। वे पूरी रात पूरी तरह से सुसज्जित होकर चलते हैं, और दिन में विश्राम करते हैं क्योंकि रास्ता खड़ी चढ़ाई वाला होता है। उनके जूते, जो उनके पैरों को ठंड से बचाने के लिए होते हैं, लगभग 1.5 लाख रुपये (1,50,000 रुपये या लगभग 1700 अमेरिकी डॉलर) के होते हैं। वे बुलेटप्रूफ जैकेट पहनते हैं और 100 गोलियां, दो ग्रेनेड, एक राइफल और एक वॉकी-टॉकी सेट साथ ले जाते हैं।वे गधे के साथ यात्रा करते हैं, जो उनके बिस्तर, भोजन आदि जैसी अन्य चीजें ढोता है। वे कम तापमान के कारण पानी साथ नहीं ले जा सकते। पीने के पानी के लिए बर्फ को पिघलाना पड़ता है। उनका भोजन केवल टिन और कैन में बंद मांस, सूखी मछली, सूखे फल, सब्जियां और चॉकलेट होता है। वे मिट्टी के तेल के चूल्हे का उपयोग करके अन्य टिन वाले भोजन को गर्म करते हैं।

वे रात भर में 30 से 60 राउंड गोलियां चलाते हैं ताकि दुश्मन को यह पता चले कि वे वहां मौजूद हैं और सतर्क हैं। वे छह महीने तक अपने परिवार से कोई संपर्क नहीं कर सकते, उनकी संचार सुविधा केवल सैटेलाइट फोन के माध्यम से होती है। वे मोबाइल फोन का उपयोग नहीं कर सकते।

उनके और उनके कई साथियों के बलिदान के कारण ही हम इस देश में शांति से जी सकते हैं। मेरे बहनोई कहते हैं, "यदि हम अपने परिवार, बच्चों या माता-पिता के बारे में सोचना शुरू कर दें, तो हम उस कठिन परिस्थिति में काम नहीं कर पाएंगे।" कमांडरों को हमेशा जवानों (भारत में इस प्रकार के सैनिकों के लिए स्थानीय शब्द) का मनोबल बढ़ाते रहना पड़ता है ताकि वे हतोत्साहित न हों।

प्रदीप अपनी तकलीफों को भारत की सुरक्षा के लिए सहन कर रहे हैं और हमें दूसरे देश के साथ सौहार्दपूर्वक जीने में मदद कर रहे हैं। यीशु ने भी हमारे लिए कष्ट सहे। उन्होंने सहन किया और कष्ट उठाया ताकि आज हम शांति और सौहार्द में रह सकें।

आज हम अपने रिश्तों में कठिनाइयों को सहने और अच्छे व्यवहार का उदाहरण कैसे स्थापित कर रहे हैं?

आइए हम एक स्वर और एक मनोभाव के साथ यीशु के पदचिह्नों पर चलना सीखें।

और अधिक चिंतन के लिए:

आइए विचार करें कि हमने एकता और शांति लाने के लिए अपने संबंधों में किस प्रकार सहनशीलता दिखाई है। क्या आप ऐसे लोगों से बातचीत करने के लिए तैयार हैं, जिन्हें आप आकर्षक या प्रतिष्ठित नहीं मानते?

क्या आप नए लोगों और उन व्यक्तियों से मित्रता करने के लिए इच्छुक हैं, जिन्हें आप अपने से निम्न स्तर का मानते हैं?

आइए इस सप्ताह प्रार्थना करें कि हमें उन संबंधों में स्वीकृति का दृष्टिकोण मिले, जहाँ यह हमारे लिए कठिन है।

एक आवाज़ – एक मक़सद
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के लिए सात दिवस भक्ति संदेश का तीसरा दिन
एक आवाज़-एक प्रेम
लेखक: जोसेफिन थियागु, त्रिची, तमिलनाडु, भारत
चिंतन के लिए प्रश्न:
हममें से कुछ लोग कर्ज़ से जूझ रहे हैं। हम उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब हम इसे चुका सकें और ऋण मुक्त हो जाएँ। यदि एक दिन आप जागें और आपको यह बताया जाए कि आपके ऋण पर ब्याज दर इतनी बढ़ गई है कि आप अपने पूरे जीवन में इसे चुका नहीं पाएँगे, तो आपको कैसा लगेगा?

रोमियों 13:8 (NIV)“किसी के प्रति कोई ऋण शेष न रखें, सिवाय इसके कि एक-दूसरे से प्रेम करते रहें, क्योंकि जो दूसरों से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है।”

ऊपर दिए गए प्रश्न के उत्तर में, मैं हताशा, निराशा, अवसाद जैसे शब्दों के बारे में सोचती हूँ। कल्पना कीजिए कि आपका ऋणदाता आपसे कहे, "यह सच है,

तुम अपने जीवन भर ऋण में रहोगे। लेकिन चिंता मत करो। मैं तुम्हें वह सब कुछ प्रदान करूंगा जिसकी तुम्हें आवश्यकता है ताकि तुम अपने ऋण का भुगतान कर सको और तुम्हारा जीवन बेहतर हो सके।"

हम प्रेम के लिए बाध्य हैं, जिसका अर्थ है कि यह प्रेम हमारे भीतर से उत्पन्न नहीं होता; यह पूरी तरह से ईश्वर से आता है। जब उन्होंने हमें बनाया, तो उन्होंने हमें शुद्ध प्रेम दिया। इसका अर्थ यह है कि हम प्रेम के ऋण में जन्म लेते हैं। हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम दूसरों से प्रेम करें।

दूसरों के प्रति प्रेम एक बाध्यता क्यों है?

हम मसीह के प्रति अनंत ऋणी हैं क्योंकि उन्होंने हम पर जो अपार प्रेम और अनुग्रह बरसाया है। हम इस ऋण को केवल तभी चुकाना शुरू कर सकते हैं जब हम उसी प्रकार का प्रेम और अनुग्रह दूसरों को दें। चूँकि मसीह का प्रेम हमारे प्रेम से अनंत रूप से बड़ा है, इसलिए हमें हमेशा इस प्रेम को चुकाने का कर्तव्य निभाना चाहिए।

यहाँ सिखाई गई पहली मूलभूत सच्चाई यह है: प्रेम केवल एक भावना नहीं है जिसे हम व्यक्त करने या रोकने के लिए चुन सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम किसी को कितना अच्छा या प्यारा मानते हैं। हमें प्रेम करने की आज्ञा दी गई है—बिना किसी भेदभाव के, चाहे कोई सुंदर हो या कुरूप, अच्छा हो या बुरा।

(पवित्र शास्त्र के वचन को फटे कागज पर टाइप कर अंकित करें)

यह एक कठिन शिक्षा है—इसे कौन स्वीकार कर सकता है? फिर भी, इस प्रेम के ऋण में प्रत्येक व्यक्ति हमारा लेनदार है। यदि हम उनसे प्रेम नहीं करते, तो हम उन्हें वह नहीं दे रहे हैं जो उनका अधिकार है। इसके अलावा, इस प्रेम का ऋण कभी पूरी तरह से चुकाया नहीं जा सकता। चाहे हम कितना भी प्रेम दें, यह कर्तव्य बना रहता है। कई बार हम प्रेम करने से थक जाते हैं, विशेष रूप से तब जब हमें लगे कि सामने वाला व्यक्ति इसके योग्य नहीं है। लेकिन यदि हम पौलुस के शब्दों को दिल से अपनाते हैं, तो हम अधिक धैर्य विकसित करेंगे और

उन लोगों के प्रति भी अपने हृदय को बंद करने में जल्दबाज़ी नहीं करेंगे जो हमें अहसान फरामोश लगते हैं।

व्यवस्था को पूरा करना

क्या हम अपने सभी ऋण चुका सकते हैं? पौलुस सिखाते हैं कि प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है। कुछ यहूदी शिक्षक भी मानते थे कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना व्यवस्था को पूरा करना है (मत्ती 22:39-40), लेकिन पौलुस के लिए सर्वोच्च शिक्षक स्वयं यीशु थे।

पौलुस इस सत्य को उजागर करते हैं कि प्रेम सभी अन्य आज्ञाओं का पालन करने की कुंजी है।

प्रेम वह आवश्यक तत्व है जो आज्ञाओं के पालन के साथ होना चाहिए। हमें आज्ञाओं का पालन अवश्य करना चाहिए, लेकिन बिना प्रेम के उनका सही अर्थ नहीं हो सकता।

दूसरों के प्रति प्रेम अन्य आज्ञाओं की आवश्यकता को प्रतिस्थापित करता है क्योंकि जब हम वास्तव में प्रेम

करते हैं, तो हम स्वचालित रूप से व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। जैसा कि पौलुस पद 10 में कहते हैं, "प्रेम पड़ोसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता।" यदि हम वास्तव में दूसरों से प्रेम करते हैं, तो हम हत्या नहीं करेंगे, व्यभिचार नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, या लालच नहीं करेंगे।

बाइबल में एक आवाज़ बार-बार गूंजती है, और वह है वह प्रेम जिसे ईश्वर हमें बनाए रखने की आज्ञा देते हैं। दुनिया प्रेम को एक शर्तपूर्ण और स्वार्थी रूप में सिखाती है—ऐसा प्रेम जो अपेक्षाओं, नियमों और व्यक्तिगत लाभों पर आधारित होता है। हमें माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों, मित्रों और समाज से प्रेम का अनुभव होता है, लेकिन यह अक्सर शर्तों के साथ आता है।

कई बार, हम दावा करते हैं कि हम ईश्वर से प्रेम करते हैं। हम कहते हैं, "मैं ईश्वर की सेवा करता हूँ क्योंकि मैं उनसे प्रेम करता हूँ। मैं बाइबल पढ़ता हूँ और प्रार्थना करता हूँ। मैं अपने चर्च की सभी सभाओं में जाता हूँ क्योंकि मैं ईश्वर से प्रेम करता हूँ।" फिर भी, हम कुछ लोगों के प्रति

द्वेष रखते हैं। हम उनसे बात करने से बचते हैं, उनके कार्यों के आधार पर उन्हें आंकते हैं, और उनके व्यवहार की निंदा करते हैं। कुछ लोगों को हमने अस्वीकार कर दिया है क्योंकि हम उनके आसपास सहज महसूस नहीं करते।

लेकिन यदि हम अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करने में संघर्ष करते हैं, तो हम ईश्वर से प्रेम करने का दावा कैसे कर सकते हैं? जैसा कि 1 यूहन्ना 4:20 में कहा गया है, "जो कोई कहे, 'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ' और अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई या बहन से प्रेम नहीं करता, जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता, जिसे उसने नहीं देखा है।"

व्यक्तिगत अनुभव

जब मैं मंत्रालय में प्रशिक्षु थी, तब मेरी एक मेंटर थीं जो हमेशा मुझसे प्रश्न करती रहती थीं। उनकी लगातार पूछताछ मुझे नियंत्रित करने जैसी लगती थी, और मैंने उन्हें एक निर्णयात्मक व्यक्ति मान लिया। इस कारण, मैं

उनके प्रति खुली नहीं थी। एक दिन, जब मैं भावनात्मक रूप से असहाय हो गई, तो मैंने उनसे अपनी नाराजगी प्रकट की।

मेरी अपेक्षा के विपरीत, उन्होंने प्रेम से उत्तर दिया और मुझे समझने का प्रयास किया। मैंने पहले ही मन बना लिया था कि वे मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगी, लेकिन एक दिन उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया और मुझसे खुलकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने को कहा। उन्होंने पहले से मेरे पैर धोने की तैयारी कर रखी थी।

यह देखकर मैं रो पड़ी। उन्होंने अपने आपको सही साबित करने का प्रयास नहीं किया—उन्होंने बस मुझे मसीह का प्रेम दिखाया। उस दिन, हम केवल गुरु और शिष्या नहीं, बल्कि सच्चे मित्र बन गए।

आगे चिंतन करें:

क्या आप वह एक आवाज़ सुन रहे हैं जो हमें एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए बुलाती है?

क्या आप मसीह के प्रेम को दिखाने में पहल करते हैं?

क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिससे आप अभी भी प्रेम करने से बच रहे हैं?

यदि ईश्वर आपके प्रेम के ऋण का मूल्यांकन करें, तो वे आपके बारे में क्या कहेंगे?ह

एक स्वर – एक मकसद
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के लिए सात दिवस भक्ति संदेश का चौथा दिन
एक स्वर - एक पहचान
ब्लेसी जे. टी., कोच्चि, केरल, भारत

चिंतन के लिए प्रश्न:
आपके बारे में वह कौन-सा गुण है, जिसे आपने यह मानते हुए स्वीकार किया कि परमेश्वर आपको उसी रूप में देखते हैं? आप अपने किसी भी आध्यात्मिक यात्रा के समय का चुनाव कर सकते हैं।

रोमियों 8:16-17 (एनआईवी) –
"आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। और यदि हम संतान हैं, तो वारिस भी—परमेश्वर के वारिस और मसीह के सहवारिस, यदि वास्तव में हम उसके साथ दु:ख उठाते हैं, तो इसलिये कि हम उसके साथ महिमा भी पाएं।"

हमारी पहचान
पहचान किसी भी व्यक्ति के जीवन को आकार देने वाली

महत्वपूर्ण चीज़ होती है। यह हमें या तो ऊपर उठा सकती है या पूरी तरह से तोड़ सकती है। एक सकारात्मक पहचान हर कोई चाहता है और इसकी खोज में लगा रहता है। हम जो कुछ भी करते हैं, वह हमारी पहचान बनाने में योगदान देता है। लेकिन बाइबल कहती है कि हमारी पहचान पहले से ही तय है: "हम परमेश्वर की संतान हैं।"

कलीसिया को परमेश्वर के परिवार के रूप में वर्णित किया गया है (इफिसियों 2:19-21)। प्रेरित पौलुस कहता है कि हम परमेश्वर की संतान और मसीह के सहवारिस हैं। इसका अर्थ है कि हमें एक नई पहचान मिली है। हमारा अतीत, हमारी असफलताएँ, और पुराना जीवन हमें परिभाषित नहीं करता। हम परमेश्वर की पुत्रियाँ हैं, और हमें यीशु मसीह के साथ उसकी विरासत में भागीदारी दी गई है। हमारा जीवन अब परमेश्वर में है, और वह हमें समान रूप से प्रेम करता है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें एक बड़े और आनंदमयी परिवार के रूप में रचा है, जहाँ एक पिता अपने प्रत्येक संतान को प्रेम और स्वीकृति देता है?

एक ऐसा पिता जो हमें बिना ईर्ष्या, निर्णय, या दोषारोपण के अपनी सभी आशीषें और अधिकार सौंपने के लिए तैयार है! यह समझ पाना कठिन है, क्योंकि यह दुनिया में हमारे अनुभवों से बिल्कुल विपरीत है। हमें संसार में इस तरह का प्रेम शायद ही देखने को मिले, लेकिन परमेश्वर के परिवार में यह संभव है।

परमेश्वर ने हमें अपनी अनंत अनुग्रह से यह पहचान दी है। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम अपने प्रयासों से कमा सकते हैं; यह एक उपहार है जो हमें स्वतंत्र रूप से दिया गया है।

हम में से कई लोग दर्द, संघर्ष, और जीवन की कठिनाइयों से गुज़रे हैं, जिसने हमें परमेश्वर को पूरी तरह अपनाने से रोका है। कई बार हमारी टूटी पहचान हमें बेकार और मूल्यहीन महसूस कराती है। हम अंधकार में फंस सकते हैं और अपनी पहचान को स्वयं ठीक करने की कोशिश कर सकते हैं।

(यहाँ टूटी हुई पियानो की एक छवि डालें)

मैं भी अपने जीवन में इसी स्थिति में थी। मेरा अतीत और मेरी पीड़ा मुझे परिभाषित करते थे। मैं उलझन में थी। दूसरों की और अपनी खुद की उच्च अपेक्षाएँ मुझे अपनी पहचान खोने पर मजबूर कर रही थीं। मुझे यह नहीं पता था कि मैं कौन हूँ, और मैं केवल स्वयं और दूसरों को संतुष्ट करने के लिए किसी और के रूप में जीने की कोशिश कर रही थी।

यह उलझन मेरे बपतिस्मा के बाद भी जारी रही, जब तक कि मैंने मसीह में अपनी पहचान नहीं खोजी। जब मैंने यह समझा कि मैं परमेश्वर की संतान हूँ और मैं उसके लिए कितनी मूल्यवान हूँ (यशायाह 43:1-4), तब मेरे जीवन में बदलाव आया। "मैं अद्भुत रीति से रची गई हूँ" (भजन संहिता 139:14) और मैं उसकी महिमा के लिए बनाई गई हूँ। मेरा अतीत मुझे परिभाषित नहीं करता, मेरी पीड़ाएँ मुझ पर शासन नहीं कर सकतीं, क्योंकि अब मैं परमेश्वर की संतान हूँ, हमेशा के लिए।

जब मैंने इस पहचान को अपनाया, तो सब कुछ बदल गया। मैंने अपने जीवन की छोटी-छोटी चीज़ों में आनंद लेना शुरू किया। मैंने यह समझा कि जब मैं अयोग्य थी,

तब भी परमेश्वर ने मुझे अपनी संतान के रूप में चुना। मैं मसीह के साथ उसकी विरासत में सहभागी हूँ, जिसने मेरे लिए अपना जीवन दे दिया।

प्रिय बहनों, मैं आपको यह फिर से याद दिलाना चाहती हूँ।
आप परमेश्वर की संतान हैं। किसी और बात पर विश्वास मत कीजिए। यही आपकी पहचान है। इसे थामे रहिए और प्रतिदिन इस सत्य पर मनन कीजिए। परमेश्वर को अपने प्रेमी पिता के रूप में स्वीकार कीजिए। आपका अतीत या आपकी टूटी पहचान आपको परिभाषित नहीं करती क्योंकि अब आप मसीह में हैं।

आइए, हम हर दिन परमेश्वर की संतान के रूप में जिएँ और इस पहचान का आनंद लें, जिससे परमेश्वर की महिमा प्रकट हो। जब हम अपनी पहचान को अपनाते हैं, तो हम कलीसिया को परमेश्वर के परिवार के रूप में सुदृढ़ कर सकते हैं।

और गहरी आत्मचिंतन के लिए:
क्या कोई चीज़ है जो मुझे मसीह में अपनी पहचान को

पूरी तरह अपनाने से रोक रही है? वह क्या है?
शैतान के कौन-कौन से झूठ हैं जिन पर मैं विश्वास करती हूँ, जो मुझे परमेश्वर की संतान के रूप में जीने से रोकते हैं?
परमेश्वर मुझे अपनी संतान के रूप में कैसे अपनाते हैं?
मैं इस बेटीपन के लिए कैसे आभार प्रकट कर सकती हूँ?
लेखिका परिचय
(यहाँ लेखिका का फोटो डालें)

ब्लेसी को 2019 में त्रिवेंद्रम, भारत की कलीसिया में बपतिस्मा मिला। उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर किया है। वर्तमान में, वह कोच्चि, भारत की कलीसिया में एक युवा मार्गदर्शक के रूप में सेवा कर रही हैं।

# एक आवाज-एक मन

टोली बरुआ, नई दिल्ली, भारत

अंतर्राष्ट्रीय  महिला दिवस 2025 के लिये ,सात दिवसीय  भक्ति संदेश का  पांचवा दिन ।

चिंतन के लिए प्रश्न:

आखिरी बार आपने कब अपने मन को गहराई से  देखा था?

## रोमियों 12:1-2

"इसलिए, हे भाइयों और बहनों, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि परमेश्वर की दया को ध्यान में रखते हुए अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करो, जो पवित्र और परमेश्वर को स्वीकार्य हो–यही तुम्हारी सच्ची और उचित आराधना है। इस संसार के स्वरूप में न ढलो, बल्कि अपने मन के नए बनने से रूपांतरित होते जाओ, ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा को पहचान सको–जो अच्छी, प्रसन्न करने वाली और सिद्ध है।"

**मन का रूपांतरण:**

अपने मन को समझना मेरे लिए सबसे कठिन कार्यों में से एक है। इसके लिए समय, स्थान और एक जिज्ञासु हृदय चाहिए, जो सुरक्षित महसूस करे।

अगर हमें यह महसूस होता है कि हम कुछ परिस्थितियों में हमेशा एक ही तरह से प्रतिक्रिया दे रहे हैं और यह हमें संतुष्ट नहीं करता, तो यह सही समय है कि हम अपने मन की स्थिति पर चिंतन करें।

**नीतिवचन 4:23**

में राजा सुलैमान ने कहा है, "अपने विचारों को संभालकर रखो, क्योंकि तुम्हारा जीवन उन्हीं से आकार लेता है।" (GNT: गुड न्यूज़ ट्रांसलेशन)

हम सभी ने सुना होगा कि हमारे विचार ही हमारी पहचान बनाते हैं और हमारे जीवन की दिशा तय करते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, हर छोटे से छोटा विचार एक भावनात्मक प्रभाव छोड़ता है, जो हमें क्रोध या आनंद जैसे भावों की ओर खींच सकता है। इसलिए हमारा जीवन और उसका अनुभव हमारे मन की स्थिति पर निर्भर करता है।

मन का नवीनीकरण

## रोमियों 12:2

में प्रयुक्त ग्रीक शब्द "anakainōsis" का अर्थ है पूर्ण रूप से बेहतर बदलाव, यानी मन और आत्मा का नवीनीकरण। जब पौलुस हमें "अपने मन के नए बनने" की बात करते हैं, तो वे यही समझाना चाहते हैं कि हमें तब तक बदलते और बढ़ते रहना चाहिए जब तक परमेश्वर की इच्छा हमें स्वाभाविक रूप से प्रिय न लगने लगे। यह वह स्थिति है जब हमारी इच्छाएँ परमेश्वर की इच्छाओं से मेल खाने लगती हैं, और हम संसार की लालसाओं और घमंड से दूर हो जाते हैं **(1 यूहन्ना 2:16)।**

इस परिवर्तन के लिए हमें केवल अपनी ताकत पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। यह परमेश्वर की कृपा और दया के द्वारा ही संभव है। हमें अपनी पूरी आत्मा और जीवन को पवित्र और स्वीकार्य बलिदान के रूप में परमेश्वर को समर्पित करना होगा।

अपने विचारों की जांच करें

हमारे विचारों का मूल्यांकन करने के लिए हमें ईश्वर के साथ पर्याप्त समय बिताने की आवश्यकता है, न केवल प्रार्थना और बातचीत में, बल्कि मौन रहकर चिंतन और आत्मविश्लेषण में भी।

## रोमियों 8:6

कहता है, "शरीर द्वारा नियंत्रित मन मृत्यु है, परन्तु आत्मा द्वारा नियंत्रित मन जीवन और शांति है।"

मेरा अनुभव यह कहता है कि जब भी मुझे गर्व या ईर्ष्या जैसी भावनाएँ परेशान करती हैं, मैं लिटनी ऑफ ह्यूमिलिटी नामक प्रार्थना की कुछ पंक्तियाँ दोहराती हूँ। जैसे ही मैं चुपचाप कहती हूँ, "दूसरों को मुझसे अधिक सम्मान मिले," मेरा हृदय बदलने लगता है और मेरा मन शांति महसूस करता है।

रूपांतरित जीवन का प्रभाव

"रूपांतरित" होने का अर्थ है कि हम पहले जैसे नहीं रहते। हमारे विचार, प्रतिक्रियाएँ और संबंध गहरे और अधिक अर्थपूर्ण हो जाते हैं। हम संसार की चीज़ों से कम जुड़ाव महसूस करने लगते हैं और स्वर्गीय खजाने को संचित करने की लालसा बढ़ने लगती है।

परमेश्वर में रूपांतरित जीवन का परिणाम यह होगा कि हमारी उपस्थिति और कार्यों से मसीह का प्रकाश झलकेगा, जिससे लोग हमारे अच्छे कामों को देखकर परमेश्वर की महिमा करेंगे।

कुछ आत्मविश्लेषण के प्रश्न:

- क्या मैं प्रतिदिन अपने आपको परमेश्वर को एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करता/करती हूँ?

- क्या मैं अपने सभी निर्णयों और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं में परमेश्वर को शामिल करता/करती हूँ?

- क्या मैं संसार के आकर्षण, मान्यताओं और परंपराओं से अधिक जुड़ा हुई हूँ?

कुछ अभ्यास करने योग्य बातें:

- प्रतिदिन कुछ समय शांति और एकांत में परमेश्वर के साथ बिताएँ।

- पवित्रशास्त्र की आयतें या प्रार्थनाएँ याद करें और दिनभर उन पर मनन करें।

- सोने से पहले पूरे दिन का आत्मविश्लेषण करें और परमेश्वर के समक्ष विचार करें।

निष्कर्ष:

यदि हम सभी मसीही सच में रूपांतरित जीवन जीने लगें और मसीह के मन को अपनाने की कोशिश करें, तो यह दुनिया हमारे विश्वास के परिवर्तनकारी प्रभाव को देख सकेगी।

परमेश्वर हमें हमारे मन को नया करने और अपने स्वरूप में ढालने में सहायता करें।

एक आवाज़ – एक आशा
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के लिए सात दिवस के भक्ति संदेश का छठवीं दिन
लेखक: बीना फिलिप, कोट्टायम टाउन, केरल, भारत

चिंतन के लिए प्रश्न:
क्या आपने कभी अपने जीवन में ऐसी स्थिति का सामना किया है जहाँ आपको लगा हो कि आपकी सारी आशाएँ समाप्त हो चुकी हैं, कुछ भी करने के लिए नहीं बचा है, आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं है, और चारों ओर अंधकार और निराशा छा गई है?
रोमियों 15:4
"क्योंकि जो कुछ पहले लिखा गया था, वह हमारे सिखाने के लिए लिखा गया था, ताकि हम धीरज और पवित्रशास्त्र की शांति से आशा रखें।"

बाइबल में लिखे गए शास्त्रों का उद्देश्य हमें धीरज रखना सिखाना और हमारी वर्तमान कठिनाइयों में हमें आशा और प्रोत्साहन देना है।
शमूएल 1:1-28
यहाँ हम एक साधारण गृहिणी, हन्ना की कहानी याद

करते हैं, जो 3000 साल पहले इस्राएल में रहती थी। उसके पति, एल्काना ने संभवतः दूसरी पत्नी, पनिन्ना से विवाह किया था क्योंकि हन्ना से उन्हें संतान नहीं हुई थी, भले ही वे उसे बहुत प्रेम करते थे। उन दिनों संतान होना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था, जिससे परिवार की विरासत आगे बढ़ सके। पनिन्ना के कई बच्चे थे, लेकिन वह हन्ना की प्रतिद्वंद्वी थी और उसमें उसके लिए कोई करुणा नहीं थी।

हन्ना के लिए परिस्थितियाँ बहुत कठिन थीं। वह साल दर साल रोती रही, निराश थी, और अपने जीवन में किसी आशा की किरण नहीं देख रही थी। हर बार जब वह पनिन्ना के बच्चों को देखती और उसकी तानों को सुनती, तो घर उसके लिए यातना स्थल बन जाता! लेकिन पद 9-18 में, हम देखते हैं कि हन्ना ने परमेश्वर के मंदिर में अपने दिल की सारी व्यथा उंडेल दी, और उसके इस विश्वास और समर्पण की प्रार्थना के बाद, उसका चेहरा फिर उदास नहीं रहा। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे एक अद्भुत पुत्र, शमूएल प्रदान किया, जो इस्राएल का पहला नबी और अंतिम न्यायाधीश बना!

हन्ना की कहानी ने मुझे बहुत आशा दी और मेरी सोच को बदल दिया। मैं भी अपने बेटे के लिए बहुत रोती और दुखी रहती थी, जो चर्च छोड़कर मानसिक बीमारी से जूझ रहा था। हालाँकि वह पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है, लेकिन मैंने परमेश्वर पर भरोसा करना सीख लिया है और अब मेरा चेहरा उदास नहीं रहता। मुझे यकीन है कि परमेश्वर के पास उसके लिए महान योजनाएँ हैं, और मुझे हर विवरण जानने या नियंत्रित करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने अपने नियंत्रण की इच्छा को छोड़ दिया और यह समझ लिया कि परमेश्वर मेरे लिए पर्याप्त है।

फिलिप्पियों 4:4-7
"प्रभु में सदा आनन्दित रहो। मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो! तुम्हारी कोमलता सबको ज्ञात हो; प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिंता मत करो, परंतु हर बात में प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी बिनतियाँ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करो। तब परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"

मसीह में मुझे वह शांति मिलती है जो सभी समझ से परे है और वह आशा जो कभी समाप्त नहीं होती।
1 पतरस 1:3-9
"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा दी, यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, 4 और एक ऐसी विरासत में, जो अविनाशी, निर्मल और अमिट है, जो स्वर्ग में तुम्हारे लिए सुरक्षित रखी गई है।"

हमें यीशु मसीह की कृपा से एक जीवित आशा, एक अविनाशी विरासत, और आत्मा का उद्धार प्रदान किया गया है। हमारे दुःख और परीक्षाएँ हमारे विश्वास को शुद्ध करने के लिए दी जाती हैं, जैसे सोना अग्नि में तपा कर शुद्ध किया जाता है।

(यहाँ 'शुद्ध सोना' की तस्वीर डालें)

आगे विचार करने के लिए:
1. रोमियों 5:1-5 पढ़ें
   - कष्ट हमें सहनशीलता, चरित्र और आशा प्रदान करते

हैं। आप किन चरित्र संबंधित संघर्षों से जूझ रहे हैं, जिन्हें सुधारना कठिन लग रहा है? इस पर प्रार्थना करें और किसी से साझा करें।

2. 2 कुरिन्थियों 2:1-11 पढ़ें
   - पौलुस किन संघर्षों से गुज़र रहे थे? उन्होंने जिन्होंने उन्हें और दूसरों को दुख पहुँचाया था, उनके साथ कैसा व्यवहार किया?
   - क्या आप अपने पति, बच्चों, ससुराल वालों, नेताओं, नियोक्ताओं, कर्मचारियों या किसी और के साथ कठिन संबंधों का सामना कर रहे हैं? क्या आपको विश्वास है कि परमेश्वर आपको चंगा कर सकते हैं यदि आप धैर्य रखें और उसके वचन का पालन करें? इस पर प्रार्थना करें।

3. रोमियों 15:13, भजन संहिता 119:43-56 पढ़ें
   - परमेश्वर की उन प्रतिज्ञाओं की सूची बनाएं जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं, ताकि आप पवित्र आत्मा की शक्ति से आशा से भर जाएँ।

आगे मनन के लिए:

- इब्रानियों 10:32-39, इब्रानियों 12:4-11, 1 कुरिन्थियों 15:58, यशायाह 40:29-31, यशायाह 46:3-4

(यहाँ लेखक की तस्वीर डालें)**

लेखक परिचय:

मैं बीना फिलिप हूँ, वर्तमान में कोट्टायम चर्च, केरल में महिला मंत्रालय की अगुवा के रूप में सेवा कर रही हूँ। मैं 1994 में मसीह की शिष्या बनी और 1995 में पूर्णकालिक मंत्रालय में प्रवेश किया और शैजूस फिलिप से विवाह किया। हम मिशन टीमों के साथ विभिन्न स्थानों में सेवा कर चुके हैं, विशेष रूप से बेंगलुरु, भारत में। हमारे तीन बच्चे हैं। हमारा सबसे बड़ा बेटा चेन्नई में काम कर रहा है, दूसरा एक NGO में सेवा के लिए प्रशिक्षण ले रहा है, और सबसे छोटी बेटी 10वीं कक्षा में पढ़ रही है।

एक आवाज़ – एक मकसद
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के लिए सात दिवस के भक्तिसंदेश  का सातवां दिन ।
लेखक: चेरिल परेरा, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

चिंतन के लिए प्रश्न:
सुबह उठने के बाद आप सबसे पहले क्या करना चाहेंगे?

(यहाँ किताब और कॉफी की तस्वीर डालें)

रोमियों 15:14-16 (NIV)
"मुझे स्वयं यह विश्वास है, मेरे भाइयों और बहनों, कि तुम स्वयं भलाई से भरे हुए हो, ज्ञान से परिपूर्ण हो और एक-दूसरे को सिखाने में सक्षम हो। फिर भी, मैंने कुछ बातों पर तुम्हें स्पष्ट रूप से लिखा है ताकि तुम्हें फिर से याद दिला सकूँ, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अनुग्रह दिया है कि मैं मसीह यीशु का सेवक बनूँ। उसने मुझे परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करने का याजकीय कार्य सौंपा, ताकि अन्यजातियाँ परमेश्वर को स्वीकार्य बलिदान बन सकें, पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र किए जाएँ

1. प्रोत्साहित करें

पौलुस ने इस पद में विश्वासियों को प्रोत्साहित किया है। वह कहता है कि वह आश्वस्त है कि वे:
- भलाई से भरे हुए हैं,
- ज्ञान से परिपूर्ण हैं,
- एक-दूसरे को सिखाने में सक्षम हैं।

जब आप अपने शिष्यों को देखते हैं, तो क्या आपको लगता है कि वे भले, ज्ञान से भरपूर और एक-दूसरे को सिखाने में सक्षम हैं?

कई बार, मुझे ऐसा महसूस नहीं होता। मुझे लगता है कि हर समस्या का समाधान मेरे पास ही है और सभी उत्तर मुझे ही देने हैं। लेकिन मुझे भरोसा रखना चाहिए कि वे भी एक-दूसरे को सिखाने में सक्षम हैं, जैसा कि शास्त्र कहता है। 'सिखाने' का अर्थ होता है किसी को किसी विषय या कौशल को सिखाना, या किसी को कोई कार्य करने के लिए निर्देश देना। यदि हम सेवक हैं, तो हमें कोमलता से सिखाने, सलाह देने और मार्गदर्शन करने पर ध्यान देना चाहिए।

2. साहसी बनें

पद 15 में पौलुस कहता है कि वह उन्हें कुछ बातें दोबारा

याद दिलाने के लिए साहसी बन रहा है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया है। यदि आप रोमियों के अध्याय 12, 13 और 14 पढ़ें, तो आप पाएँगे कि पौलुस ने कई विषयों पर स्पष्टता से बातें कही हैं, जैसे:
- अपने शरीर को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करना,
- स्वयं को आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण न समझना,
- एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करना,
- शासन अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारी रहना,
- विश्वास में कमजोर व्यक्तियों को स्वीकार करना आदि।

हममें भी वही साहस होना चाहिए, जैसा पौलुस में था। क्या हम अपने शिष्यों को इन महत्वपूर्ण बातों की याद दिलाते हैं या टकराव से बचने के लिए चुप रहते हैं? साहसी बनना लोगों को प्रेमपूर्वक सत्य बताने जैसा है।

2 तीमुथियुस 1:7 (NIV) में लिखा है:
"क्योंकि जो आत्मा परमेश्वर ने हमें दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती, बल्कि शक्ति, प्रेम और आत्म-संयम देती है।"

3. हमारा मिशन

सेवकाई करने का अर्थ है जनसेवा करना। पौलुस एक

धार्मिक शिक्षक थे, वे "इब्रानियों में इब्रानी" थे और उन्होंने यीशु के शिष्यों को सताने तक का कार्य किया, यहाँ तक कि स्तिफनुस की हत्या को भी स्वीकार किया। लेकिन जब उन्होंने यीशु से मुलाकात की, तो उनका मिशन बदल गया। पहले उनका मिशन शिष्यों को नष्ट करना था, लेकिन अब उनका मिशन लोगों को प्रभु के पास लाना था। पहले वे एक यहूदी रब्बी थे, लेकिन अब वे याजक बन गए, जिन्हें अन्यजातियों की सेवा करनी थी और उन्हें परमेश्वर के लिए एक स्वीकार्य बलिदान बनाना था।
(यहाँ "आत्मिक बलिदान" की तस्वीर डालें)

आज हमारा मिशन भी यीशु के मिशन के समान है (लूका 19:10)। हमें भी हर व्यक्ति को प्रभु के पास एक स्वीकार्य बलिदान के रूप में प्रस्तुत करना है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है। रोमियों 15:16 में याजकीय सेवा की भाषा का प्रयोग किया गया है। पौलुस कहते हैं कि वह यीशु मसीह के "सेवक याजक" के रूप में सेवा कर रहे हैं, सुसमाचार का प्रचार एक "याजकीय सेवा" के रूप में कर रहे हैं, ताकि अन्यजातिय विश्वासियों को परमेश्वर के लिए एक स्वीकार्य बलिदान बनाया जा सके।

आगे विचार करने के लिए:
इस सप्ताह के डिवोशनल के दौरान, हमने "एक आवाज़, एक मकसद" के विषय पर मनन किया। अब हम अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए यीशु के मिशन पर केंद्रित हों।
- हर दिन किसी को प्रोत्साहित करें।
- साहसी बनें और मुद्दों को संबोधित करें।

क्या मैं और जिन लोगों की मैं सेवा करती हूँ, वे परमेश्वर के लिए एक "स्वीकार्य बलिदान" हैं या कुछ बदलावों की आवश्यकता है?
आइए प्रार्थना करें कि हम अपने जीवन, अपने शब्दों, और अपने उद्देश्य से परमेश्वर को महिमा दें, क्योंकि हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 का उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुये हैं!

(यहाँ लेखक की तस्वीर डालें)

लेखक परिचय:
चेरिल 1987 में यीशु की शिष्या बनीं और उन्होंने मुंबई,

दिल्ली और चेन्नई में चर्च की सेवा की। वर्तमान में, वह और उनके पति मार्क, मुंबई चर्च के पूर्वी क्षेत्र का नेतृत्व कर रहे हैं।